قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿75﴾

७५. वह कहने लगे क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर कभी सब्र नहीं कर सकते।

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ﴿76﴾

७६. (मूसा ने) जवाब दिया अगर अब इस के बाद मैं आप से किसी चीज़ के बारे में सवाल करूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना, बेशक मेरी तरफ़ से[1] आप (सीमा) उज्र को पहुँच चुके।

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿77﴾

७७. फिर दोनों चले, एक गाँववासियों के पास आकर उन से खाना माँगा, उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी से इंकार कर दिया, दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरना चाहती थी उस ने उसे सीधी कर दिया,[2] (मूसा) कहने लगे अगर आप चाहते तो इस पर मज़दूरी ले लेते।

قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿78﴾

७८. उस ने कहा बस यह जुदाई है मेरे और तेरे बीच, अब मैं तुझे इन बातों की हक़ीक़त भी बताऊँगा जिस पर तुम सब्र न कर सके।[3]

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿79﴾

७९. नाव तो कुछ ग़रीबों की थी जो नदी में काम करते थे, मैंने उस में कुछ तोड़-फोड़ करने का इरादा कर लिया, क्योंकि उन के आगे एक राजा था जो हर अच्छी नाव को ज़बरदस्ती ले लेता था।

[1] यानी अगर अब सवाल करूँ तो अपने साथ रखने की ख़ुशनसीबी से मुझे महरूम कर दें, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी, इसलिए कि आप के पास उचित कारण (सबब) होगा।

[2] हज़रत ख़िज़्र ने उस दीवार को हाथ लगाया और चमत्कारिक रूप (मोजिज़ाना तौर) से वह सीधी हो गयी, जैसाकि सहीह बुख़ारी के क़ौल से वाज़ेह है।

[3] लेकिन बिछड़ने से पहले हज़रत ख़िज़्र ने तीनों वाक़ेआत की हक़ीक़त से उन्हें आगाह और बाख़बर करना ज़रूरी समझा ताकि मूसा किसी शक के शिकार न हो जायें, और वह यह समझ लें कि नबूअत का इल्म और है जिससे उन्हें सुशोभित (मुज़य्यन) किया गया है, और कुछ उत्पत्ति के विषय का इल्म और है जो अल्लाह की मर्ज़ी और इल्म के ताबे है, जिसका इल्म हज़रत ख़िज़्र को दिया गया है, और उसी के ऐतबार से उन्होंने ऐसे काम किये जो दीनी ऐतबार से अच्छे नहीं थे, इसीलिए हज़रत मूसा उचित रूप (बजा तौर) से उन पर मौन नहीं रह सके थे।

وَأَمَّا الْغُلَٰمُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَآ أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ﴿80﴾

८०. और उस नौजवान के माता-पिता ईमान वाले थे, हमें यह डर हुआ कि कहीं यह उन्हें अपनी सरकशी और वेदीनी से मजबूर और व्याकुल (परेशान) न कर दे।

فَأَرَدْنَآ أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَوٰةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿81﴾

८१. इसलिए हम ने चाहा कि उन्हें उनका रव उस के बदले इस से वेहतर पाक और उस से ज़्यादा प्यारा और महबूब बच्चा अता कर दे।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَٰمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِى الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُۥ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَٰلِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبْلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُۥ عَنْ أَمْرِى ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿82﴾

८२. और दीवार का क़िस्सा यह है कि उस नगर में दो यतीम लड़के हैं जिनका ख़ज़ाना उनकी इस दीवार के नीचे गड़ा है, उन के बाप बहुत ही नेक इंसान थे, तो तेरा रब चाहता था कि ये दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में जाकर अपना यह ख़ज़ाना तेरे रव की रहमत और मेहरबानी से निकाल लें, मैंने अपने इरादे (और ख़्वाहिश) से कोई काम नहीं किया, यह हक़ीक़त थी उन वाक़ेआत की जिन पर आप सब्र न कर सके।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَن ذِى الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿83﴾

८३. और आप से ज़ुल्क़रनैन के वाक़ेआ के बारे में यह लोग पूछ रहे हैं[1] (आप) कह दीजिए कि मैं उन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूं।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُۥ فِى الْأَرْضِ وَءَاتَيْنَٰهُ مِن كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿84﴾

८४. हम ने धरती पर उसे ताक़त दी थी और उसे हर चीज़[2] के साधन भी अता कर दिये थे।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿85﴾

८५. वह एक रास्ता के पीछे लगा।

---

[1] यह मूर्तिपूजकों के तीसरे सवाल का जवाब है जो यहूदियों के कहने पर उन्होंने नबी ﷺ से किये थे।

[2] سَبَب का असली मतलब रस्सी है, इसका इस्तेमाल ऐसे साधन (वसायेल) और माध्यम (ज़रिया) के लिये होता है जो मक़सद हासिल के लिये इस्तेमाल किया जाता है, इस आधार पर سَبَبًا का मतलब है कि हम ने उसे ऐसे साधन और माध्यम मुहय्या किये, जिन से काम लेकर उस ने जीत हासिल की, दुश्मनों का घमंड मिट्टी में मिलाया, ज़ालिम हाकिमों का नाश किया।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِیْ عَیْنٍ حَمِئَةٍ وَّ وَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ۬ قُلْنَا یٰذَا الْقَرْنَیْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَ اِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِیْهِمْ حُسْنًا ﴿86﴾

८६. यहाँ तक कि सूरज डूबने के मुक़ाम तक पहुँच गया और उसे एक दलदल के स्रोत (चश्मे) में डूबते हुए पाया और उस स्रोत की जगह पर एक क़ौम को भी पाया, हम ने कह दिया हे ज़ुल्क़रनैन! तू उन्हें सज़ा दे या उन के बारे में तू कोई अच्छा तरीक़ा निकाले।

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ یُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَیُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿87﴾

८७. उसने कहा कि जो ज़ुल्म करेगा उसे तो हम भी अब सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जायेगा और वह उसे सख़्त अज़ाब देगा।

وَ اَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَ سَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا یُسْرًا ؕ ﴿88﴾

८८. लेकिन जो ईमान लाये और नेक अमल करे उस के लिए बदले में भलाई है, और हम उसे अपने काम में भी आसानी का हुक्म देंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿89﴾

८९. फिर वह दूसरे रास्ते की तरफ़ लगा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۙ ﴿90﴾

९०. यहाँ तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पर पहुँचा तो उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलते पाया कि उन के लिए हम ने उस से कोई पर्दा और आड़ नहीं बनायी।[1]

كَذٰلِكَ ؕ وَ قَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَیْهِ خُبْرًا ﴿91﴾

९१. वाक़ेआ ऐसा ही है, हम ने उसके आस-पास के कुल समाचारों को घेर रखा है।[2]

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿92﴾

९२. वह फिर एक दूसरे रास्ते की तरफ़ लगा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَیْنَ السَّدَّیْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا یَكَادُوْنَ یَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿93﴾

९३. यहाँ तक कि जब दो दीवारों के बीच पहुँचा उन दोनों के उस तरफ़ एक ऐसी क़ौम को पाया जो बात समझने के क़रीब भी न थी।

---

[1] यानी ऐसी जगह पर पहुँच गया जो पूरब दिशा की आख़िरी आबादी थी, जहाँ उसने ऐसी क़ौम देखा जो मकानों में निवास करने के बजाय मैदानों और सहराओं में निवास किये हुए, निर्वस्त्र थी, यह मतलब है उन के और सूर्य के बीच पर्दा नहीं था, सूर्य उन के नंगे जिस्मों पर निकलता था।

[2] यानी ज़ुल्क़रनैन के बारे में हम ने जो बयान किया है वह इसी तरह है कि पहले वह पश्चिम की आख़िरी सीमा तक फिर पूरब की आख़िरी सीमा तक पहुँचा और हमें उसकी सब सलाहियतों, संसाधनों (अस्बाब) और दूसरी बातों का पूरा इल्म है।

قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿94﴾

९४. (उन्होंने) कहा हे ज़ुल्क़रनैन ! याजूज और माजूज इस देश में बड़े फसाद फैलाते हैं[1] तो क्या हम आप के लिए कुछ माल जमा कर दें? (इस शर्त पर कि) आप हमारे और उन के बीच कोई दीवार बना दें।

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿95﴾

९५. उस ने जवाब दिया कि मेरे वस में मेरे रब ने जो अता कर रखा है वही बेहतर है, तुम केवल अपनी ताक़त और क़ूवत से मेरी मदद करो, तुम्हारे और उन के बीच मैं मजबूत दीवार बना देता हूं।

آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿96﴾

९६. मुझे लोहे की चादरें ला दो, यहां तक कि जब उन दो पहाड़ों के बीच दीवार तैयार कर दी तो हुक्म दिया कि फूंको (यानी तेज़ आग जलाओ) उस वक़्त तक कि लोहे की इन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया, तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿97﴾

९७. फिर न तो उन में उस दीवार पर चढ़ने की ताक़त थी और न उस में कोई छेद कर सकते थे।

قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿98﴾

९८. कहा कि यह केवल मेरे रब की रहमत है, लेकिन जब मेरे रब का वादा आयेगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿99﴾

९९. और उस दिन हम उन्हें आपस में एक-दूसरे में गुडमुड होते हुए छोड़ देंगे और नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा, फिर सब को एक साथ हम जमा कर लेंगे।

[1] याजूज और माजूज दो सम्प्रदाय (क़ौम) है और सहीह हदीस के बिना पर इंसानों में से ही हैं, और उन की तादाद दूसरे मानव जाति के मुक़ाबले में अधिक होगी और उन्ही से नरक ज़्यादा भरेगा। (सहीह बुख़ारी)

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿100﴾

१००. और उस दिन हम नरक को (भी) काफ़िरों के सामने ला खड़ा कर देंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿101﴾

१०१. जिन की आँखें मेरी याद से पर्दे में थीं और (सच बात) सुन भी नहीं सकते थे।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿102﴾

१०२. क्या काफ़िर यह सोंचे बैठे हैं कि मेरे सिवाय वे मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लेंगे? (सुनो) हम ने तो उन काफ़िरों की मेहमानी के लिए नरक को तैयार कर रखा है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿103﴾

१०३. कह दीजिए कि अगर (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने अमल के सबब सबसे ज़्यादा नुक़सान में कौन है?

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿104﴾

१०४. वे हैं कि जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की सभी कोशिश बेकार हो गई और वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿105﴾

१०५. यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों से और उस से मिलने से इंकार किया, इसलिए उन के सारे अमल बेकार हो गये, फिर क़यामत के दिन हम उनका कोई भार मुक़र्रर न करेंगे।

ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿106﴾

१०६. हक़ीक़त यह है कि उनका बदला नरक है, क्योंकि उन्होंने कुफ्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿107﴾

१०७. जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम भी किये, बेशक उन के लिए फ़िरदौस (जन्नत का सब से ऊँचा मुक़ाम)[1] के बाग़ों मे स्वागत है।

---

[1] جنات الفردوس जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है। इसलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जब भी तुम अल्लाह से जन्नत का सवाल करो तो अल-फ़िरदौस (सर्वोच्च) का सवाल करो, इसलिए कि वह जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है और वहीं से जन्नत की नदियों का उदगम (शुरूअ) है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद, बाबु व कान अर्शुहू अलल माए)

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿108﴾

१०८. जहाँ वे हमेशा रहेंगे, जिस मक़ाम को बदलने का कभी भी उनका इरादा ही न होगा।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿109﴾

१०९. कह दीजिए कि अगर मेरे रब की बातों को लिखने के लिए समुद्र स्याही बन जाये तो वह भी मेरे रब की बातों के ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जायेगा, चाहे हम उसी जैसा दूसरा भी उसकी मदद के लिए ले आयें।

قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿110﴾

११०. आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ, (हाँ) मेरी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की जाती है कि सब का माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में[1] किसी को भी शरीक न करे।

سُوْرَةُ مَرْيَمَ

सूरतु मरियम-१९

सूर: मरियम* मक्के में उतरी और इस में अट्ठानवे आयतें हैं और छ: रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] नेक काम वह है जो सुन्नत के ऐतबार से हो, यानी जो अपने रब से मुलाक़ात का यक़ीन रखता हो उसे चाहिए कि हर अमल नबी ﷺ की सुन्नत के मुताबिक करे, और दूसरे यह कि अल्लाह की इबादत में किसी दूसरे को साझीदार न ठहराये, इसलिए कि धर्म में नई बातें मिलाना और मूर्तिपूजा दोनों ही अमलों के बेकार होने का सबब हैं, अल्लाह तआला इन दोनों से हर मुसलमान को महफ़ूज रखे।

* हब्शा की हिजरत के क़िस्से में बताया गया है कि इथोपिया (हब्शा) के राजा नजाशी और उस के दरबारी और मंत्रियों (वज़ीरों) के सामने जब सूर: मरियम के शुरूआती हिस्से को हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने सुनाया तो उसे सुनकर उन सभी की दाढ़ियाँ आसूँओं से भीग गयीं, और नजाशी ने कहा कि यह क़ुरआन और हज़रत ईसा जो आये थे, सब एक ही रौशनी की किरणें हैं। (फ़तहुल क़दीर)

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿1﴾

१. काफ़•हा•या•ऐन•स्वाद•

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿2﴾

२ यह है तेरे रब की उस रहमत का बयान, जो उसने अपने बन्दे ज़करिया[1] पर की थी।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿3﴾

३. जब कि उस ने अपने रब से चुपके-चुपके दुआ की थी।[2]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿4﴾

४. कहा कि हे मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गयी हैं और सिर बुढ़ापे के सबब भड़क उठा है, लेकिन मैं कभी भी तुझ से दुआ करके महरूम नहीं रहा।

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿5﴾

५. और मुझे अपने (मरने के) बाद अपने क़रीबी रिश्तेदारों का डर है, मेरी बीवी भी बाँझ है, लेकिन तू मुझे अपनी तरफ़ से वारिस अता कर।

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿6﴾

६. जो मेरा भी वारिस हो और याक़ूब के वंश का भी वारिस, और हे मेरे रब! तू उसे मक़बूल बन्दा बना ले।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿7﴾

७. हे ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यहया है, हम ने उससे पहले इसका हमनाम भी किसी को नहीं किया।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿8﴾

८. (ज़करिया) कहने लगे मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ और मैं ख़ुद बुढ़ापे की बहुत कमज़ोर हालत को पहुँच चुका हूँ।[3]

---

[1] हज़रत ज़करिया इस्राईल के वंश में से नबी हैं, यह बढ़ई थे और यही काम उन की आमदनी का ज़रिया था। (सहीह मुस्लिम, बाबु मिन फ़ज़ाएले ज़करिया)

[2] चुपके-चुपके दुआयें इसलिए की कि एक तो यह अल्लाह को ज़्यादा प्यारा है, क्योंकि इस में गिड़गिड़ाना, ध्यान, विनय (आजिज़ी) और नर्मी ज़्यादा होती है, दूसरे इसलिए कि कमज़ोर अक़्ल वाले न कहें कि यह बूढ़ा अब बुढ़ापे में औलाद माँग रहा है, जबकि औलाद के सभी ज़ाहिरी उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं।

[3] عاقر उस औरत को भी कहते हैं, जो अपने बुढ़ापे के सबब जनने की सलाहियत से महरूम हो चुकी हो और शुरू से ही बाँझ को भी कहते हैं, यहाँ यह दूसरे ही मतलब में है।

قَالَ كَذَٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِن قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ﴿9﴾

९. हुक्म हुआ कि (वादा) इसी तरह हो चुका, तेरे रब ने कह दिया है कि मुझ पर तो यह बिल्कुल आसान है और तू ख़ुद जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूं।

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿10﴾

१०. कहने लगे हे मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी बना दे, हुक्म हुआ कि तेरे लिए निशानी यह है कि सेहतमंद होने के बावजूद भी तू तीन रातों तक किसी इंसान से बोल न सकेगा।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَن سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿11﴾

११. अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आकर उन्हें इशारा करते हैं कि तुम सुबह और शाम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो।

يَا يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿12﴾

१२ हे यह्या! (मेरी) किताब को मज़बूती से थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही से इल्म अता किया।

وَحَنَانًا مِّن لَّدُنَّا وَزَكَاةً ۖ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿13﴾

१३. और अपने पास से दया (रहम) और पाकीज़ी भी वह परहेज़गार (संत) इंसान था।

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿14﴾

१४ और अपने माता-पिता के साथ नेक था, वह सख़्त और गुनहगार न था।

وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿15﴾

१५. उस पर सलामती है जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन वह मरे, और जिस दिन वह ज़िन्दा करके उठाया जायेगा।[1]

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿16﴾

१६. इस किताब में मरियम के क़िस्से भी बयान कर, जबकि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ़ आयीं।

[1] तीन मौक़े इंसान के लिए बहुत डरावने होते हैं १- जब इंसान मां के गर्भ से बाहर आता है, २- जब मौत का पंजा उसे अपनी पकड़ में लेता है, ३- जब उसे क़ब्र से ज़िन्दा करके उठाया जायेगा तो वह अपने को मैदान हश्र की भयानकता में घिरा हुआ पायेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया इन तीनों जगहों पर उस के लिये हमारी तरफ़ से हिफ़ाज़त और सुकून है।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۚ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿17﴾

१७. और उन लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया, फिर हम ने उस के पास अपनी रूह (जिब्रील ﷺ) को भेजा तो वह उस के सामने पूरा इंसान बनकर ज़ाहिर हुआ।

قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿18﴾

१८. यह कहने लगीं मैं तुझ से रहमान (दयालु) की पनाह माँगती हूँ, अगर तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿19﴾

१९. (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, तुझे एक पाक लड़का देने आया हूँ।

قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿20﴾

२०. कहने लगीं कि भला मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी मर्द का हाथ तक मस नहीं हुआ और न मैं बदकार हूँ।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿21﴾

२१. उस ने कहा बात तो यही है, (लेकिन) तेरे रब का हुक्म है कि वह मुझ पर बहुत आसान है, हम तो उसे लोगों के लिए एक निशानी बना देंगे[1] और अपनी ख़ास रहमत[2] यह तो एक निर्धारित (मुक़र्ररा) बात है।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿22﴾

२२. फिर वह गर्भवती (हामिला) हो गयीं और इसी वजह से वह यकसू होकर एक दूर जगह पर चली गयीं।

---

[1] यानी मैं आम साधनों (वसायलों) के लिए मजबूर नहीं हूँ, मेरे लिए यह बिल्कुल आसान है और हम उसे अपने क़ुदरत की एक निशानी बनाना चाहते हैं, इस से पहले हम ने तुम्हारे बाप आदम को बिना औरत और मर्द के पैदा किया और तुम्हारी माँ हव्वा को बिना औरत के केवल मर्द से, और सभी मख़लूक़ के जानदारों को औरत और मर्द के मिलाप से जन्म दिया, और अब ईसा को जन्म देकर चौथी हालत में भी पैदा करके अपनी क़ुदरत का प्रदर्शन (मुज़ाहिरा) करना चाहते हैं और वह है केवल औरत के गर्भ से बिना मर्द के पैदा कर देना, हम ख़िलक़त के चारों रूपों पर क़ुदरत रखते हैं।

[2] इस से मुराद नुबूवत है, जो अल्लाह की ख़ास रहमत है और उन के लिए भी जो इस नुबूवत पर ईमान लायेंगे।

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿23﴾

२३. फिर उसे प्रसव पीड़ा (दर्द जिह) एक खजूर के पेड़ के तने के नीचे ले आयी, और मुंह से निकल गया कि हाय! मैं इस से पहले मर गयी होती और लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती।

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿24﴾

२४. इतने में उसे नीचे से ही आवाज़ दी कि मायूस न हो, तेरे रब ने तेरे पांव के नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है।

وَهُزِّىْۤ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿25﴾

२५. और उस खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिला, यह तेरे सामने ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा।

فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْۤ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿26﴾

२६. अब बेख़ौफ़ होकर खा पी और आंखें ठंडी रख, अगर तुझे कोई इंसान दिखायी दे तो कह देना कि मैंने अल्लाह रहमान के नाम का रोज़ा रखा है, मैं आज किसी इंसान से बात न करूंगी।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْــًٔا فَرِيًّا ﴿27﴾

२७. अब (हज़रत ईसा) को लिए हुए वह अपने क़ौम में आयीं, सब ने कहा कि मरियम तूने बहुत कुकर्म (बुरा काम) किया।

يٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿28﴾

२८. हे हारून की बहन![1] न तो तेरा बाप बुरा आदमी था न तेरी मां बदकार थी।

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿29﴾

२९. (मरियम ने) अपने बच्चे की तरफ़ इशारा किया, सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बच्चे से बातें कैसे करें?

قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ﴿30﴾

३०. (बच्चा) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का बंदा हूं, उस ने मुझे किताब अता की है और मुझे अपना दूत (पैग़म्बर) बनाया है।

[1] हारून से मुराद मुमकिन है उनका कोई भाई हो, यह भी मुमकिन है कि हारून से मुराद हारून रसूल (मूसा के भाई) ही हों, और अरबों की तरह उनका रिश्ता हारून की तरफ़ कर दिया।

३१. और उस ने मुझे मुबारक बनाया है जहां भी मैं रहूं, और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया है, जब तक भी मैं ज़िन्दा रहूं।

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿31﴾

३२. और उस ने मुझे अपनी मां का सेवक बनाया है, और मुझे सख़्त और बदबख़्त नहीं किया।

وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿32﴾

३३. और मुझ पर मेरे जन्म के दिन और मेरी मौत के दिन, और जिस दिन कि मैं दोबारा ज़िन्दा खड़ा किया जाऊंगा, सलाम ही सलाम है।

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿33﴾

३४. यह है सच्ची कहानी ईसा इब्ने मरियम की, यही है वह सच बात जिस में लोग शक और शुब्हा में लिप्त (मुब्तिला) हैं।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿34﴾

३५. अल्लाह के लिए औलाद का होना जायेज़ नहीं वह तो बहुत पाक है, वह तो किसी काम के करने का इरादा करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी वक़्त हो जाता है।

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿35﴾

३६. और मेरा और तुम सब का रब अल्लाह तआला ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿36﴾

३७. फिर (ये) गुट आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे,[1] लेकिन काफ़िरों के लिए (वैल) दुख है एक बड़े दिन के आ जाने से।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿37﴾

[1] यहां الاحزاب से मुराद अहले किताब के गुट और ख़ुद इसाइयों के गुट हैं जिन्होंने हज़रत ईसा के बारे में आपस में इख़्तिलाफ़ किया। यहूदियों ने कहा कि वह जादूगर और बदकारी से जन्मा लड़का है यानी यूसुफ़ बढ़ई के बेटे हैं, इसाईयों के प्रोटेस्टेन्ट गुट ने कहा कि वह अल्लाह के बेटे हैं, कैथोलिक गुट ने कहा वह तीन माबूदों में से तीसरे हैं, और तीसरे आर्थोडक्स गुट ने कहा वह माबूद हैं। इस तरहन यहूदियों ने निन्दा (हक़ीर) और ज़लील किया और इसाईयों ने बहुत ग़लू से काम लिया। (ऐसरूत्तफ़ासीर और फ़तहुल क़दीर)

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّٰلِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ (38)

३८. क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे सामने हाज़िर होंगे, लेकिन आज तो ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (39)

३९. और तू उन्हे इस दुख और मायूसी के दिन का डर सुना दे जबकि काम अंजाम को पहुँचा दिया जायेगा, और ये लोग ग़फ़लत और बेईमानी में ही रह जायेंगे।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ (40)

४०. बेशक धरती के और धरती के रहने वालों के वारिस हम ही होंगे, और सब लोग हमारी तरफ़ लौटाकर लाये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ إِبْرَٰهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا (41)

४१. इस किताब में इब्राहीम (की कहानी) का बयान कर, बेशक वह बहुत सच्चे पैग़म्बर (ईशदूत) थे।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَٰٓأَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْـًٔا (42)

४२. जबकि उस ने अपने पिता से कहा के हे पिता! आप उनकी इबादत क्यों कर रहे हैं जो न सुन सकें न देखें न आप को कुछ फ़ायेदा पहुँचा सकें?

يَٰٓأَبَتِ إِنِّي قَدْ جَآءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيٓ أَهْدِكَ صِرَٰطًا سَوِيًّا (43)

४३. हे (मेरे प्यारे) पिता! (आप देखिए) मेरे पास वह इल्म आया है, जो आप के पास आया ही नहीं, तो आप मेरी ही मान लीजिए मैं बिल्कुल सीधे रास्ते की तरफ़ आप का पथ-प्रदर्शन (रहनुमाई) करूँगा।

يَٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَٰنَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا (44)

४४. मेरे पिता ! आप शैतान की इबादत करने से रुक जायें, शैतान तो रहम और करम करने वाले अल्लाह की बहुत नाफ़रमानी करने वाला है।

يَٰٓأَبَتِ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَٰنِ وَلِيًّا (45)

४५. हे पिता ! मुझे डर लग रहा है कि कहीं आप पर अल्लाह का कोई अज़ाब न आ पड़े कि आप शैतान के दोस्त बन जायें।

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ ۖ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿46﴾

४६. (उस ने) जवाब दिया कि हे इब्राहीम! क्या तू हमारे माबूदों से मुंह फेर रहा है, (सुन) अगर तू न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूँगा, जा एक लम्बी मुद्दत तक मुझ से अलग रह।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿47﴾

४७. कहा अच्छा तुम पर सलाम हो,[1] मैं तो अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ करता रहूँगा[2] वह मुझ पर बहुत मेहरबानी कर रहा है।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿48﴾

४८. और मैं तो तुम्हें भी और जिन-जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो उन्हें भी (सब को) छोड़ रहा हूँ, केवल अपने रब को पुकारता रहूँगा, मुझे यक़ीन है कि मैं अपने रब से दुआ करने में नाकाम नहीं हूँगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿49﴾

४९. जब (इब्राहीम) उन सब को और अल्लाह के सिवाय उन के सब माबूदों को छोड़ चुके तो हम ने उन्हें इसहाक़ और याक़ूब अता किये और हर एक को नबी बना दिया।

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿50﴾

५०. और उन सब को हम ने अपनी बहुत-सी रहमत अता की, और हम ने उन के सच्चे वादे को बुलन्द दर्जा कर दिया।[3]

---

[1] यह सलाम एहतेराम के रूप में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है, बल्कि यह बात ख़त्म करने का इज़हार है। जैसे :

﴿وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا﴾

"जब बेवक़ूफ़ लोग उन से बातें करते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।" (सूर: अल-फ़ुरक़ान-६३)

में ईमानवालों और अल्लाह के बन्दों का तरीक़ा बताया गया है।

[2] यह उस वक़्त कहा था जब हज़रत इब्राहीम को मूर्तिपूजक के लिए मोक्ष (मग़फ़िरत) की दुआ करने के मना होने का इल्म नहीं था, जब यह मालूम हुआ तो आप ने यह दुआ करने का क्रम ख़त्म कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११४)

[3] لِسَانَ صِدْقٍ सच्चे वादे से मुराद बड़ी बड़ाई और अच्छी बातें हैं।

५१. इस किताब में मूसा का भी बयान कर, जो चुना हुआ और रसूल और नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿51﴾

५२. हम ने उसे तूर पहाड़ के दायें किनारे से पुकारा और सरगोशी करते हुए उसे क़रीब कर लिया।

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿52﴾

५३. और अपनी रहमत ख़ास से उस के भाई हारून को नबी बना कर अता किया।

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿53﴾

५४.और इस किताब में इस्माईल (की कहानी) भी बयान कर, वह बड़ा ही वादे का पक्का था, और था भी रसूल और नबी।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿54﴾

५५. और वह अपने परिवार वालों को लगातार नमाज और ज़कात (धर्मदान) का हुक्म देता था, और था भी अपने रब के दरबार में प्यारा और मक़बूल।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿55﴾

५६. और इस किताब में इदरीस को भी बयान कर, वह भी सच्चा पैग़म्बर (ईशदूत) था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿56﴾

५७. हम ने उसे ऊँचे मुक़ाम पर उठा लिया।[1]

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿57﴾

५८. यही वे नबी हैं जिन पर अल्लाह तआला ने दया और कृपा की, जो आदम की औलाद में से हैं और उन लोगों के वंश से हैं, जिन्हें हम ने नूह के साथ नाव पर चढ़ा लिया था और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद से और हमारी तरफ़ से हिदायत याफ़्ता और हमारे प्यारे लोगों में से। इन के सामने जब अल्लाह रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं, ये सज्दा करते और रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۤ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۡ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿58﴾

[1] हज़रत इदरीस कहते हैं कि हज़रत आदम के बाद पहले नबी थे, और हज़रत नूह के या उन के बाप के दादा थे, उन्होंने सब से पहले कपड़ा सीना शुरू किया।

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ﴿59﴾

५९. फिर उन के बाद ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ बर्बाद कर दी और मनोकांक्षा (ख्वाहिशात) के पीछे पड़ गये, इसलिए उनका नुकसान उन के सामने आयेगा।

اِلَّا مَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ وَلَا يُظۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ﴿60﴾

६०. सिवाय उन के जो माफ़ी माँग लें और ईमान ले आयें और नेकी के काम करें, ऐसे लोग जन्नत में जायेंगे और उन के हक़ों का ज़रा भी नुक़सान न किया जायेगा।

جَنّٰتِ عَدۡنِ ۟الَّتِىۡ وَعَدَ الرَّحۡمٰنُ عِبَادَهٗ بِالۡغَيۡبِ‌ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعۡدُهٗ مَاۡتِيًّا ﴿61﴾

६१. हमेशा रहने वाले स्वर्गों (जन्नतों) में जिन का ग़ैबी वादा अल्लाह रहमान ने अपने बंदों को दिया है। बेशक उसका वादा पूरा होने वाला ही है।

لَا يَسۡمَعُوۡنَ فِيۡهَا لَغۡوًا اِلَّا سَلٰمًا‌ ؕ وَلَهُمۡ رِزۡقُهُمۡ فِيۡهَا بُكۡرَةً وَّعَشِيًّا ﴿62﴾

६२. वे लोग वहाँ कोई बेकार बात न सुनेंगे केवल सलाम ही सलाम सुनेंगे, उन के लिए वहाँ सुबह और शाम उनकी रोज़ी होगी।[1]

تِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِىۡ نُوۡرِثُ مِنۡ عِبَادِنَا مَنۡ كَانَ تَقِيًّا ﴿63﴾

६३. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाते हैं जो अल्लाह से डरते हों।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمۡرِ رَبِّكَ‌ۚ لَهٗ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡنَا وَمَا خَلۡفَنَا وَمَا بَيۡنَ ذٰلِكَ‌ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿64﴾

६४. हम तेरे रब के हुक्म के बिना उत्तर ही नहीं सकते, हमारे आगे-पीछे और उनके बीच की सभी चीज़ें उसी की क़ुदरत में हैं, और तेरा रब भूलने वाला नहीं।

---

[1] इमाम अहमद ने इसकी तफ़सीर में कहा है कि जन्नतों में रात और दिन नहीं होंगे, केवल रौशनी और रौशनी होगी। हदीस में है जन्नत में जाने वालों के पहले गुट के मुंह चौदहवीं के चाँद की तरह रौशन होंगे, वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक बहेगी और न पेशाब होगा और न पाख़ाना ही होगा, उन के बर्तन और कंघियाँ सोने की होंगी, उनका शरीर ख़ुश्बूदार और उनका पसीना कस्तूरी (की तरह) ख़ुश्बूदार होगा। हर जन्नत में जाने वाले की दो बीवियाँ होंगी, उनकी पिंडलियों का गूदा उन के गोश्त के पीछे से दिखायी देगा, उनकी ख़ूबसूरती और सुन्दरता के सबब। उन में आपस में हसद और जलन नहीं होगी, सुबह और शाम अल्लाह की तारीफ़ करेंगे। (सहीह बुख़ारी, बदउल ख़लक़ बाब माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नः व इन्नहा मख़लूक़तुन और सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नः बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नः व अहलेहा)

६५. आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है सब का रब वही है, तू उसी की इबादत कर और उसकी इबादत पर मज़बूत हो जा, क्या तेरे इल्म में उसका हमनाम (और बराबर) कोई दूसरा भी है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿65﴾

६६. और इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या फिर जिन्दा करके निकाला जाऊँगा?

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿66﴾

६७. क्या यह इंसान इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया, हालाकि वह कुछ भी न था।

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿67﴾

६८. तेरे रब की क़सम! हम उन्हें और शैतानों को जमा करके ज़रूर ही नरक के चारों तरफ घुटनों के बल गिरे हुए हाज़िर कर देंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿68﴾

६९. हम फिर हर गिरोह से उन्हें अलग निकाल खड़ा करेंगे, जो अल्लाह रहमान से बहुत अकड़े-अकड़े से फिरते थे।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿69﴾

७०. फिर हम उन्हें भी अच्छी तरह जानते हैं, जो नरक में दाख़िल होने के ज़्यादा लायक़ हैं।

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿70﴾

७१. और तुम में से हर एक वहाँ ज़रूर हाज़िर होने वाला है, यह तेरे रब के ज़िम्मे क़तई फ़ैसला है।

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿71﴾

७२. फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे और ज़ुल्म करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।[1]

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿72﴾

[1] इसकी तफ़सीर सहीह हदीसों में इस तरह बयान है कि नरक के ऊपर एक पुल बनाया जायेगा, जिस पर से हर ईमानवाले और काफ़िर को गुज़रना होगा, ईमान वाले अपने-अपने अमल के ऐतबार से जल्दी और देर से गुज़र जायेंगे, लेकिन काफ़िर उस पुल को पार करने में कामयाब नहीं होंगे और नरक में गिर जायेंगे।

७३. और जब उनके सामने हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं (बताओ) हम तुम दोनों फ़रीक़ों में किसका मान (मर्तबा) ज़्यादा है और किस की बैठक (सभा) शानदार है?

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿73﴾

७४. और हम तो उनसे पहले बहुत सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं, जो साज़ व सामान और नाम नमूद में इन से कहीं ज़्यादा थे।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿74﴾

७५. कह दीजिए कि जो भटकावे में होता है अल्लाह रहमान उस को बहुत लम्बा मौक़ा देता है, यहाँ तक कि वे उन चीज़ों को देख लें जिन के वादे किये जाते हैं, यानी अज़ाब या क़यामत को, उस वक़्त उन्हें ठीक तरह से मालूम हो जायेगा कि कौन बुरे पद वाला है और किसका जत्था कमज़ोर है।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿75﴾

७६. और हिदायत पाये हुए लोगों को हिदायत में अल्लाह और बढ़ाता है, और बाक़ी रहने वाली नेकी तेरे रब के क़रीब बदला के अनुरूप (लिहाज़ से) और नतीजा के अनुरूप बहुत अच्छी हैं।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ﴿76﴾

७७. क्या तूने उसे भी देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ्र किया और कहा कि मुझे तो माल और औलाद तो ज़रूर दी जायेगी।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿77﴾

७८. क्या वह ग़ैब का इल्म रखता है या अल्लाह से कोई वादा ले चुका है?

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿78﴾

७९. कभी नहीं, यह जो कुछ कह रहा है हम उसे ज़रूर लिख लेंगे, और उस के लिए अज़ाब बढ़ाते चले जायेंगे।

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿79﴾

८०. और यह जिन चीज़ों के बारे में कह रहा है, उसे हम उस के बाद ले लेंगे, और यह अकेला ही हमारे सामने हाज़िर होगा।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿80﴾

८१. उन्होंने अल्लाह के सिवाय दूसरे देवता बना रखें हैं कि वे उन के लिए इज़्ज़त (सम्मान) का सबब हों।

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا (81)

८२. लेकिन ऐसा कभी होगा नही, वे तो इनकी इबादत से मुकर जायेंगे, और उल्टे इन के दुश्मन बन जायेंगे।

كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا (82)

८३. क्या तूने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास शैतानों को भेजते हैं, जो उन्हें ख़ूब उकसाते हैं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا (83)

८४. तू उन के बारे में जल्दी न कर, हम तो ख़ुद ही इन के वक़्त का शुमार कर रहे हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا (84)

८५. जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान का मेहमान बनाकर जमा करेंगे।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا (85)

८६. और मुजरिमों को (बहुत प्यास की हालत में) नरक की तरफ़ हांक ले जायेंगे।

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا (86)

८७. किसी को सिफ़ारिश का हक़ न होगा सिवाय उन के जिन्होंने अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई वादा ले लिया है।

لَّا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا (87)

८८. और उनका क़ौल तो यह है कि अल्लाह रहमान ने भी औलाद बना रखी है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا (88)

८९. बेशक तुम बहुत (बुरी और) भारी चीज़ लाये हो।

لَّقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا (89)

९०. क़रीब है कि इस क़ौल के सबब आकाश फट जायें और धरती में दरार हो जाये और पहाड़ कण-कण हो जायें।

تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا (90)

९१. कि वे रहमान की औलाद साबित करने बैठे हैं।

أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا (91)

९२. और रहमान के यह लायक़ नहीं कि वह औलाद रखे।

وَمَا يَنبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا (92)

إِن كُلُّ مَن فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّآ ءَاتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ﴿93﴾

९३. आकाशों और धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के गुलाम बनकर ही आने वाले हैं।

لَّقَدْ أَحْصَىٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿94﴾

९४. उन सब को उस ने घेर रखा है और सब की पूरी तरह गिन्ती भी कर रखा है।

وَكُلُّهُمْ ءَاتِيهِ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فَرْدًا ﴿95﴾

९५. ये सारे के सारे क़यामत के दिन अकेले उस के सामने हाज़िर होने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿96﴾

९६. बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं, उन के लिए अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿97﴾

९७. हम ने (क़ुरआन को) तेरी ज़ुबान में बहुत आसान कर दिया है[1] कि तू उस के ज़रिये परहेज़गारों (सदाचारियों) को ख़ुशख़बरी दे और झगड़ालू लोगों को बाख़बर कर दे।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿98﴾

९८. और हम ने इस से पहले बहुत सी जमाअतें हलाक कर दी हैं, क्या उन में से एक की भी आहट तू पाता है या उनकी आवाज़ की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।

سُورَةُ طه

सूरतु ताहा-२०

सूर: ताहा* मक्के में उतरी और इसकी एक सौ पैंतीस आयतें हैं और आठ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] क़ुरआन को आसान करने का मतलब उस ज़ुबान में उतारना है जिसको पैग़म्बर जानता था यानी अरबी ज़ुबान में, फिर इस के मज़ामीन का खुला हुआ वाज़ेह और साफ़ होना है।

* हज़रत उमर के दीने इस्लाम क़ुबूल करने के कई सबब बयान किये गये हैं, कुछ तारीख़ी क़ौल में अपनी बहन और बहनोई के घर में सूर: ताहा का सुनना और उस से प्रभावित (मुतास्सिर) होना भी बयान है। (फ़तहुल क़दीर)

طٰهٰ ﴿1﴾

१. ता॰ हा॰

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿2﴾

२. हम ने यह कुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तू कठिनाई में पड़ जाये।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿3﴾

३. बल्कि उसकी नसीहत के लिए जो अल्लाह से डरता है।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿4﴾

४. इसका उतारना उसकी तरफ़ से है जिस ने धरती को और ऊँचे आकाशों को पैदा किया है।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿5﴾

५. जो रहमान है, अर्श पर क़ायम है।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿6﴾

६. जिसकी मिल्कियत आकाशों और धरती और इन के बीच और धरती की सतह से नीचे हर चीज़ पर है।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿7﴾

७. अगर तू ऊँची बात कहे तो वह हर छिपी, और छिपी से छिपी चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿8﴾

८. वही अल्लाह है, जिस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, अच्छे नाम उसी के हैं।

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿9﴾

९. तुझे मूसा का वाक़ेआ भी मालूम है?

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿10﴾

१०. जबकि उस ने आग देखकर अपने परिवार से कहा कि थोड़ी देर ठहर जाओ मुझे आग दिखाई दे रही है, ज़्यादा मुमकिन है कि मैं उसका अँगारा तुम्हारे पास लाऊँ या आग के पास से रास्ते की ख़बर पाऊँ।[1]

[1] यह उस समय का वाक़ेआ है जब मूसा ﷺ मदयन से अपनी बीवी को लेकर (जो एक क़ौल के ऐतबार से हज़रत शुऐब की बेटी थी) अपनी माँ की तरफ़ वापस जा रहे थे, अंधेरी रात थी और रास्ता भी अजान था, और कुछ मुफ़स्सिरों के अनुसार उनकी बीवी के बच्चा जन्म देने का वक़्त क़रीब था और उन्हे गर्मी की ज़रूरत थी या ठंड के सबब गर्मी की ज़रूरत पड़ी हो, इतने में उन्हे दूर से आग के शोले उठते हुए दिखायी दिये, घरवालों से यानी बीवी से (या कुछ

११. जब वह वहाँ पहुँचे तो आकाशवाणी (निदा) हुई कि हे मूसा!

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿11﴾

१२. बेशक मैं ही तेरा रब हूँ, तू अपने जूते उतार दे[1] क्योंकि तू पाक मैदान 'तोवा' में है।

اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿12﴾

१३. और मैंने तुझे चुन लिया हे, अब जो वह्यी (प्रकाशना) की जायेगी उसे ध्यानपूर्वक (तवज्जह से) सुन।

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿13﴾

१४. बेशक मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवाय इबादत (पूजा) के लायक़ दूसरा कोई नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।[2]

اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿14﴾

१५. क़यामत ज़रूर आने वाली है, जिसे मैं पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर इंसान को वह बदला दिया जाये जो उस ने कोशिश किया हो।

اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿15﴾

१६. तो अब इस के ईमान से तुझे ऐसा इंसान रोक न दे, जो इस पर ईमान (विश्वास) न रखता हो और अपनी आरज़ूों के पीछे पड़ा हो, वर्ना तू नाश हो जायेगा।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿16﴾

१७. और हे मूसा! तेरे दाहिने हाथ में क्या है।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿17﴾

मुफ़स्सिर कहते हैं कि नौकर और बच्चा भी था इसलिए बहुवचन (जमा) शब्द का इस्तेमाल किया) कहा तुम यहीं ठहरो! शायद मैं आग का कोई शोला वहाँ से साथ ले आऊँ या कम से कम वहाँ से रास्ते का इशारा मिल जाये।

[1] जूते उतारने का हुक्म इसलिए दिया कि इस में विनम्रता (आजिज़ी) का इज़हार और इज़्ज़त और एहतेराम का हक़ ज़्यादा है।

[2] इबादत के बाद नमाज़ का ख़ास तौर से हुक्म दिया, अगरचे इबादत में नमाज़ भी शामिल थी, ताकि उसकी वह अहमियत वाज़ेह हो जाये जैसाकि उसकी है।

१८. जवाब दिया कि यह मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हू और जिस से मैं अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लिया करता हू, और दूसरे भी इस में मुझे बहुत फायदे हैं।

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ (18)

१९. कहा कि हे मूसा! उसे (हाथ से) नीचे डाल दे।

قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ (19)

२०. तो डालते ही सांप बन कर दौड़ने लगी।

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ (20)

२१. कहा कि बैख़ौफ़ होकर उसे पकड़ ले, हम उसे उसी पहले की शक्ल में फिर ला देंगे।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ (21)

२२. और अपना हाथ अपनी बगल (कोख) में डाल ले, तो वह सफेद रौशन होता हुआ निकलेगा, लेकिन बिना किसी दोष (ऐब) और रोग के यह दूसरा मोजिज़ा है।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ (22)

२३. यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى (23)

२४. अब तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, उस ने बड़ा फ़साद मचा रखा है।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ (24)

२५. (मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي (25)

२६. और मेरे काम को मुझ पर आसान कर दे।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي (26)

२७. और मेरी ज़ुबान की गांठ खोल दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي (27)

२८. ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें।

يَفْقَهُوا قَوْلِي (28)

२९. और मेरा वज़ीर मेरे अहल में से बना दे।

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي (29)

३०. (यानी) मेरे भाई हारून को।

هَارُونَ أَخِي (30)

३१. तू उस से मेरी कमर कस दे।

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي (31)

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿32﴾

३२. और उस को मेरे काम में सहायक (मददगार) कर दे।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿33﴾

३३. ताकि हम दोनों बहुत तेरी तारीफ़ बयान करें।

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿34﴾

३४. और बहुत तेरी याद करें।

إِنَّكَ كُنتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿35﴾

३५. बेशक तू हमें अच्छी तरह से देखने-भालने वाला है।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿36﴾

३६. (अल्लाह तआला ने) कहा हे मूसा! तेरे सभी सवाल पूरे कर दिये गये।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿37﴾

३७. और हम ने तो तुझ पर एक बार और भी इस से भी बड़ा एहसान किया है।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿38﴾

३८. जबकि हम ने तेरी माँ के दिल में वह उतारा, जिस का बयान अब किया जा रहा है।

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿39﴾

३९. कि तू इसे सदूक में बंद करके नदी में छोड़ दे, फिर नदी इस को किनारे पर ले जायेगी और मेरा और ख़ुद उसका दुश्मन उसे ले लेगा,[1] और मैंने अपनी तरफ़ की ख़ास मुहब्बत और मक़बूलियत तुझ पर डाल दिया, ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी आँखों के सामने किया जाये।[2]

---

[1] मुराद फ़िरऔन है जो अल्लाह का भी दुश्मन और हज़रत मूसा का भी दुश्मन था, यानी लकड़ी का वह संदूक तैरता हुआ जब राजभवन (शाही महल) के किनारे पहुँचा तो उसे बाहर निकाल कर देखा गया तो उस में एक मासूम बच्चा था, जिसे फ़िरऔन ने अपनी बीवी की तमन्ना पर पालन-पोषण के लिए राजभवन में रख लिया।

[2] इसलिए अल्लाह की क़ुदरत और उसकी हिफ़ाज़त और संरक्षण (निगरानी) का कमाल और मोजिज़ा देखिये कि जिस बच्चे के सबब फ़िरऔन अनगिनत बच्चों का क़त्ल करवा चुका है, ताकि वह बच्चा ज़िन्दा न रहे उसी बच्चे को अल्लाह तआला उसकी गोद में पालन करवा रहा है, और माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है, लेकिन उसकी मज़दूरी भी उसी मूसा के दुश्मन से हासिल कर रही है।

४०. (याद कर) जबकि तेरी बहन चल रही थी और कह रही थी कि अगर तुम कहो तो मैं उसे बता दूं जो उसका निगहबान बन सके, इस तरह से हम ने तुझे पुन: तेरी माँ के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठंडी रहे और वह दुखी न हो, और तूने एक इंसान का क़त्ल कर दिया था, उस पर भी हम ने तुझे ग़म से बचा लिया, यानी हम ने तेरी अच्छी तरह आज़माईश कर ली, फिर तू कई साल तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा, फिर अल्लाह के लिखे हुए नसीब के अनुसार हे मूसा! तू आया।

إِذْ تَمْشِيٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَـٰكَ إِلَىٰٓ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَـٰكَ مِنَ ٱلْغَمِّ وَفَتَنَّـٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِيٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَـٰمُوسَىٰ ﴿40﴾

४१. और मैंने तुझे ख़ास तौर से अपने लिए पसन्द कर लिया।

وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿41﴾

४२. अब तू अपने भाई सहित मेरी निशानियाँ साथ ले जा, ख़बरदार! तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना।

ٱذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَـٰتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿42﴾

४३. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, उस ने बड़ी सरकशी की है।

ٱذْهَبَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ﴿43﴾

४४. उसे नर्मी से[1] समझाओ, शायद वह समझ ले या डर जाये।

فَقُولَا لَهُۥ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُۥ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿44﴾

४५. दोनों ने कहा, हे हमारे रब! हमें डर है कि कहीं फ़िरऔन हम पर कोई ज़ुल्म न करे या अपनी सरकशी में बढ़ न जाये।

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿45﴾

४६. जवाब मिला कि तुम दोनों कभी डर न करो मैं तुम्हारे साथ हूँ और सुनता-देखता रहूँगा।

قَالَ لَا تَخَافَآ ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿46﴾

[1] यह योग्यता (सलाहियत) भी अल्लाह की तरफ़ तब्लीग़ करने वालों के लिए बहुत ज़रूरी है। क्योंकि सख़्ती से लोग भागते हैं, आसानी और नर्मी से क़रीब आते और प्रभावित (मुतास्सिर) होते हैं, और वे हिदायत हासिल करने वाले होते हैं।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنَٰكَ بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكَ وَٱلسَّلَٰمُ عَلَىٰ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَىٰٓ (47)

४७. तुम उस के पास जाकर कहो कि हम तेरे रब के पैग़म्बर (ईशदूत) हैं, तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे, उन के अज़ाब ख़त्म कर, हम तो तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानियाँ लेकर आये हैं, सलामती उसी के लिए है जो हिदायत को मज़बूती से अपनाये।

إِنَّا قَدْ أُوحِىَ إِلَيْنَآ أَنَّ ٱلْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ (48)

४८. हमारी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जो झुठलाये और मुँह फेरे उस के लिए अज़ाब है।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَٰمُوسَىٰ (49)

४९. (फ़िरऔन ने) पूछा कि हे मूसा! तुम दोनों का रब कौन है।

قَالَ رَبُّنَا ٱلَّذِىٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ (50)

५०. जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिस ने हर एक को उसका ख़ास रूप अता किया, फिर हिदायत भी दिया।[1]

قَالَ فَمَا بَالُ ٱلْقُرُونِ ٱلْأُولَىٰ (51)

५१. उस ने कहा (अच्छा यह तो बताओ) पहले के लोगों की क्या हालत होनी है?

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّى فِى كِتَٰبٍ لَّا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنسَى (52)

५२. जवाब दिया कि उनका इल्म मेरे रब के पास किताब में (मौजूद) है, न तो मेरा रब ग़लती करता है न भूलता है।

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ (53)

५३. उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिस्तर बनाया है और उस में तुम्हारे चलने के लिए रास्ते बनाये हैं, और आकाश से वर्षा (बारिश) भी वही करता है, फिर उस वर्षा के सबब कई तरह की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं।

---

[1] जैसे जो शक्लो सूरत इंसान के लिए मुनासिब थी वह उसे, जो जानवरों के लायक़ थी वह जानवरों को अता किया, रास्ता दिखाया का मतलब हर जानदार को उसकी प्राकृतिक (फ़ितरी) ज़रूरतों के ऐतबार से रहन-सहन, खाने-पीने और चलने-फिरने का तरीक़ा समझा दिया, उसी के ऐतबार से हर जानदार अपनी जीवन सामग्री (सामान) जमा करता है और ज़िन्दगी के ये दिन गुज़ारता है।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ﴿54﴾

५४. तुम ख़ुद खाओ और अपने पशुओं को भी चराओ, बेशक इस में अक़्लमंदों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿55﴾

५५. उसी धरती में से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में फिर वापस लौटायेंगे, और उसी से दोबारा तुम सबको[1] निकाल खड़ा करेंगे।

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿56﴾

५६. और हम ने उसे अपनी सभी निशानियाँ दिखा दीं, लेकिन उस ने फिर भी झुठलाया और इंकार कर दिया।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿57﴾

५७. कहने लगा हे मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें अपने जादू की ताक़त से हमारे देश से निकाल दे।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿58﴾

५८. ठीक है, हम भी तेरा सामना करने के लिए इसी जैसा जादू ज़रूर लायेंगे, बस तू हमारे और अपने बीच वादा का वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तू, खुले मैदान में मुक़ाबिला (प्रतियोगिता) हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿59﴾

५९. (मूसा ने) जवाब दिया कि ज़ीनत और समारोह (जश्न) के दिन का वादा है, और यह कि लोग दिन चढ़े ही जमा हो जायें।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿60﴾

६०. फिर फ़िरऔन लौट गया और उसने अपने हथकंडे जमा किये, फिर आ गया।

[1] कुछ क़ौल के ऐतबार से मय्यत को गाड़ने के बाद तीन लप मिट्टी डालते वक़्त इस आयत को पढ़ना नबी ﷺ से साबित है, लेकिन सुबूतों के ऐतबार से यह क़ौल ज़ईफ़ है, लेकिन आयत बिना तीन लप डालने वाला क़ौल जो इब्ने माजा में है सही है, इसलिए गाड़ने के बाद दोनों हाथों की लप से तीन-तीन बार मिट्टी डालने को उलमा ने सहीह कहा है। देखिये किताबुल जनायेज़, पेज १५२ और इरवाउल ग़लील नं॰ २५१, भाग ३, पेज २००।

قَالَ لَهُمْ مُّوسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿61﴾

६१. मूसा ने उन से कहा कि तुम्हारी शामत हो, अल्लाह (तआला) पर झूठ और इल्जाम न लगाओ कि वह तुम्हें अज़ाब से नाश कर दे, याद रखो! वह कभी कामयाब न होगा जिस ने झूठी बात गढ़ी।

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿62﴾

६२. फिर ये लोग आपस में विचार-विमर्श (मश्विरों) में मुख़्तलिफ़ राय हो गये और छुपकर सरगोशी करने लगे।

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿63﴾

६३. कहने लगे ये दोनों सिर्फ़ जादूगर हैं और इनका मज़बूत इरादा है कि अपने जादू की ताक़त से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारे बेहतरीन धर्म को नाश कर दें।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿64﴾

६४. तो तुम भी अपना कोई दाँव उठा न रखो, फिर पंक्तिबद्ध (सफ़बंद) होकर आ जाओ, जो आज ग़ालिब हो गया वही कामयाबी ले गया।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿65﴾

६५. वे कहने लगे कि हे मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿66﴾

६६. जवाब दिया नहीं तुम ही पहले डालो[1] अब तो मूसा को यह ख़्याल होने लगा कि उन की रस्सियाँ और लकड़ियाँ उन के जादू की ताक़त से दौड़ भाग रही हैं।[2]

---

[1] हज़रत मूसा ने पहले उनको अपना खेल दिखाने को कहा ताकि उन पर यह वाज़ेह हो जाये कि वह जादूगरों की इतनी बड़ी तादाद से जो फ़िरऔन जमा करके लाया है, और उसी तरह उन के जादू के खेल से कभी डरे नहीं हैं। दूसरे उन के जादू के खेल-तमाशे जब अल्लाह के चमत्कार (मोजिज़े) से पलक झपकते ख़त्म और बर्बाद हो जायेंगे तो इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा और जादूगर यह सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि यह जादू नहीं है, हक़ीक़त में इसको अल्लाह की मदद हासिल है कि एक पल में इसकी एक लाठी हमारे सारे खेल तमाशे निगल गयी।

[2] क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों से मालूम होता है कि रस्सियाँ और लाठियाँ हक़ीक़त में साँप नहीं बनी थीं, बल्कि जादू की ताक़त से ऐसा महसूस हो रहा था जैसे नज़रबन्द कर दी जाती है, इसका असर यह होता है कि आरज़ी और वक़्ती तौर से देखने वालों पर डर तारी हो जाता है, अगरचे

६७. इस से मूसा अपने मन ही मन में डरने लगे।

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿67﴾

६८. हम ने कहा कि कुछ डर न कर, बेशक तू ही गालिब और ऊँचा होगा।

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ﴿68﴾

६९. और तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उन की सारी कारीगरी को यह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह केवल जादूगरों के करतब हैं, और जादूगर कहीं से भी आये कामयाब नहीं होता।

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿69﴾

७०. अब तो सारे जादूगर सज्दा में हो गये और पुकार उठे कि हम तो हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿70﴾

७१. (फ़िरऔन) कहने लगा कि क्या मेरे हुक्म के पहले ही तुम उस पर ईमान ले आये? बेशक यही तुम्हारा वह बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है, (सुन लो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे कटवाकर तुम सब को खजूर के तनों में फांसी पर लटकवा दूँगा और तुम्हें पूरी तरह से मालूम हो जायेगा कि हम में से किस की मार ज़्यादा सख़्त और स्थाई (देर पा) है।

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿71﴾

७२. (उन्होंने) जवाब दिया कि नामुमकिन है कि हम तुम्हें प्रधानता (तरजीह) दें उन दलीलों पर जो हमारे सामने आ चुकीं और उस अल्लाह पर जिस ने हमें पैदा किया, अब तो तू जो कुछ करना चाहे कर ले, तू जो कुछ हुक्म चला सकता है वह इसी दुनियावी ज़िन्दगी में ही है।

قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿72﴾

चीज़ की हक़ीक़त तब्दील न हो। दूसरी बात यह मालूम हुई कि जादू चाहे कितना बड़ा हो, वह चीज़ की वास्तविकता (हक़ीक़त) नहीं बदल सकता।

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ (73)

७३. हम (इस उम्मीद से) अपने रब पर ईमान लाये कि वह हमारी ग़लतियाँ माफ़ कर दे और ख़ास कर) जादूगरी (का पाप) जो कुछ तूने हम से मजबूर करके कराया है, अल्लाह ही सब से बेहतर और हमेशा रहने वाला है।

إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ (74)

७४. बात यही है कि जो भी मुजरिम बनकर अल्लाह (तआला) के यहाँ जायेगा, उस के लिए नरक है, जहाँ न मौत होगी और न ज़िन्दगी।

وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ (75)

७५. और जो भी उस के पास ईमान वाला होकर आयेगा और उस ने नेक काम भी किये होंगे उस के लिए ऊँचे और अच्छे मरतबे (दर्जे) हैं।

جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ (76)

७६. दायमी जन्नत जिन के नीचे नदियाँ बह रही होंगी जहाँ वे हमेशा रहेंगे, यही बदला है हर उस इंसान का जो पाक है।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ (77)

७७. और हम ने मूसा की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) उतारी कि तू रातों-रात मेरे बंदों को ले चल, और उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना ले, फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का ख़ौफ़ होगा न डर।

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ (78)

७८. फ़िरऔन ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया, फिर तो समुद्र उन सब पर छा गया जैसा कुछ छा जाने वाला था।

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ (79)

७९. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम (समुदाय) को भटकावे में डाल दिया और सीधा रास्ता न दिखाया।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ (80)

८०. हे इस्राईल के पुत्रो! (देखो) हम ने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से आज़ाद कर दिया और तुम को तूर पहाड़ के दाहिनी तरफ़ का वादा दिया और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा।[1]

[1] 'मन्न' और 'सलवा' के उतरने का बयान सूर: अल-बक़र: के शुरू में गुज़र चुका है, 'मन्न' कोई मज़ेदार मीठी चीज़ थी जो आकाश से उतरती थी और 'सलवा' से मुराद बटेर पक्षी है जो

كُلُوا مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِى فَقَدْ هَوَىٰ ﴿81﴾

८१. तुम हमारी अता की हुई पाक रोज़ी खाओ, और उस में हद से तजावुज (उल्लघंन) न करो, वरना तुम पर मेरा अज़ाब उतरेगा, और जिस पर मेरा अज़ाब उतर जायेगा, वह बेशक नाश हुआ।

وَإِنِّى لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهْتَدَىٰ ﴿82﴾

८२. और बेशक मैं उन्हें माफ़ कर देने वाला हूँ, जो माफ़ी माँगें, ईमान लायें, नेकी के काम करें और सीधे रास्ते पर भी रहें।[1]

وَمَآ أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿83﴾

८३. और हे मूसा! तुझे अपनी क़ौम से (ग़ाफ़िल कर के) कौन सी बात जल्दी ले आयी?

قَالَ هُمْ أُولَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِى وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿84﴾

८४. कहा वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे हैं, और मैंने हे रब तेरी तरफ़ जल्दी इसलिए की कि तू ख़ुश हो जाये।

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِىُّ ﴿85﴾

८५. कहा हम ने तेरी क़ौम को तेरे पीछे आज़माईश में डाल दिया और उन्हें 'सामरी' ने भटका (कुमार्ग कर) दिया।[2]

ज़्यादा तादाद में उन के पास आते थे और वे ज़रूरत के ऐतबार से उन्हें पकड़ कर पकाते और खा लेते।

[1] यानी अल्लाह की माफ़ी का हक़दार होने के लिए चार बातें ज़रूरी हैं, कुफ़्र और विमुखता (शिर्क) से पश्चाताप (तौबा), ईमान, नेकी का काम और सच्चे रास्ते पर चलते रहना यानी सीधे रास्ते पर चलते हुए उसे मौत आये, नहीं तो वाज़ेह बात है कि माफ़ी माँगने और ईमान के बाद अगर उस ने फिर शिर्क और कुफ़्र का रास्ता अपनाया, यहाँ तक कि उसकी मौत हो गयी और वह कुफ़्र और शिर्क ही पर रहा तो अल्लाह की माफ़ी के बजाय अज़ाब का हक़दार होगा।

[2] हज़रत मूसा के बाद 'सामरी' नाम के इंसान ने इस्राईल की औलाद को बछड़ा पूजने पर लगा दिया, जिसकी ख़बर अल्लाह तआला ने तूर पर ही मूसा को दी कि 'सामरी' ने तेरे पैरोकारों को भटका दिया। परीक्षा (इम्तेहान) में डालने को अल्लाह ने अपने से सम्बन्धित (मंसूब) किया है इसलिए कि ख़ालिक़ वही है नहीं तो भटकाने का सबब तो 'सामरी' ही था जैसाकि أضلهم السامري से वाज़ेह है।

فَرَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ ٱلْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِى ﴿86﴾

८६. तो मूसा बहुत गुस्सा और ग़मगीन होकर वापस लौटे, और कहने लगे कि हे मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था ? क्या उसकी मुद्दत तुम्हें लम्बी मालूम हुई ? या तुम्हारा इरादा ही यह है कि तुम पर तुम्हारे रब का अज़ाब उतरे, इसलिए तुम ने मेरे वादे को तोड़ दिया।

قَالُوا۟ مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ ٱلْقَوْمِ فَقَذَفْنَٰهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى ٱلسَّامِرِىُّ ﴿87﴾

८७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम ने अपने अधिकार (इख़्तियार) से आप के साथ वादे को नहीं तोड़ा, बल्कि हम पर जो ज़ेवर क़ौम के लाद दिये गये थे उन्हें हम ने डाल दिया, और उसी तरह 'सामरी' ने भी डाल दिये।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُۥ خُوَارٌ فَقَالُوا۟ هَٰذَآ إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِىَ ﴿88﴾

८८. फिर उस ने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाला, यानी बछड़े की मूर्ति जिसकी गाय जैसी आवाज़ थी, फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा भी माबूद है और मूसा का भी, लेकिन मूसा भूल गया है।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿89﴾

८९. क्या ये भटके हुए लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के किसी बुरे-भले का हक़ (इख़्तियार) रखता है?[1]

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَٰرُونُ مِن قَبْلُ يَٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِۦ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ ٱلرَّحْمَٰنُ فَٱتَّبِعُونِى وَأَطِيعُوٓا۟ أَمْرِى ﴿90﴾

९०. और हारून ने इस से पहले ही उन से कह दिया था कि हे मेरी क़ौम के लोगो ! इस बछड़े से तो तुम्हारा इम्तेहान किया गया है, तुम्हारा सच्चा रब तो अल्लाह रहमान ही है तो तुम सब मेरा अनुकरण (पैरवी) करो और मेरी बात मानते चले जाओ।

---

[1] अल्लाह तआला ने उनकी बेवक़ूफ़ी और कुबुद्धि (कमअक़्ली) का बयान करते हुए फ़रमाया कि इन अक़्ल के अंधों को इतना भी पता नहीं चला कि यह बछड़ा कोई जवाब दे सकता है, न फ़ायेदा-नुक़सान पहुँचाने का सामर्थ्य (क़ुदरत) रखता है, जबकि देवता तो वही हो सकता है जो हर इंसान की विनती सुनने, फ़ायेदा-नुक़सान पहुँचाने और ज़रूरत को पूरा करने का सामर्थ्य (क़ुदरत) रखता हो।

९१. (उन्होंने) जवाब दिया कि मूसा के आने तक हम तो इसी के पुजारी रहेंगे।

قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَٰكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿91﴾

९२. (मूसा) कहने लगे हे हारून! इन्हें भटकता देखते हुए तुम्हें किस बात ने रोक रखा था?

قَالَ يَٰهَٰرُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوٓا۟ ﴿92﴾

९३. कि तू मेरे पीछे न आया, क्या तू भी मेरी इताअत का नाफ़रमान बन बैठा।

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِى ﴿93﴾

९४. (हारून ने) कहा हे मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और सिर के बाल न खींच, मुझे तो केवल यह ख़्याल आया कि कहीं आप यह न कहें कि तूने इस्राईल की औलाद में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) पैदा कर दिया और मेरी बात की प्रतीक्षा (इंतेज़ार) न की।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِى وَلَا بِرَأْسِىٓ ۖ إِنِّى خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِى ﴿94﴾

९५. (मूसा ने) पूछा, 'सामरी' तेरा क्या मुआमला है?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَٰسَٰمِرِىُّ ﴿95﴾

९६. (उस ने) जवाब दिया कि मुझे वह चीज़ दिखायी दी जो उन्हें न दिखायी दी तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के पदचिन्हों (नक़्शे क़दम) से एक मुट्ठी भर ली, उसे उस में डाल दिया।[1] इसी तरह मेरे दिल ने मेरे लिए यह बात बना दी।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا۟ بِهِۦ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ ٱلرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِى نَفْسِى ﴿96﴾

९७. कहा ठीक है जा दुनियावी जिन्दगी में तेरी सज़ा यही है कि तू कहता रहे «मुझे न छूना» और एक दूसरा भी वादा तेरे साथ है जो तुझ से कभी न टलेगा, और अब तू अपने इस देवता को भी देख लेना, जिस पर पुजारी बना हुआ था, हम इसे जला देंगे फिर उसे नदी में कण-

قَالَ فَٱذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِى ٱلْحَيَوٰةِ أَن تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُۥ ۖ وَٱنظُرْ إِلَىٰٓ إِلَٰهِكَ ٱلَّذِى ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ لَّنُحَرِّقَنَّهُۥ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُۥ فِى ٱلْيَمِّ نَسْفًا ﴿97﴾

[1] ज़्यादा व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने الرسول से मुराद जिब्रील लिए हैं और मतलब यह बयान किया है कि जिब्रील के घोड़े को गुज़रते हुए सामरी ने देखा और उस के पद चिन्हों के नीचे की मिट्टी उस ने सम्भाल कर रख ली जिस में ख़िलाफ़े फ़ितरत असर थे, इस मिट्टी को उसने पिघले हुए जेवरों और बछड़े में डाला तो उस में से एक तरह की आवाज़ निकलनी शुरू हो गई जो उनको भटकाने का सबब बनी।

कण (जर्रा-जर्रा) उड़ा देंगे ।[1]

إِنَّمَآ إِلَٰهُكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿98﴾

९८. वेशक तुम सब का सच्चा मावूद केवल अल्लाह ही है, उस के सिवाय कोई मावूद नहीं उसका इल्म (ज्ञान) सभी चीजों पर हावी है ।

كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ ءَاتَيْنَٰكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿99﴾

९९. इसी तरह हम तेरे सामने पहले के गुजरे वाक़ेआत को बयान करते हैं और वेशक हम तुझे अपने पास से नसीहत अता कर चुके हैं ।

مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُۥ يَحْمِلُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وِزْرًا ﴿100﴾

१००. इस से जो मुंह फेरेगा वह वेशक क़यामत (प्रलय) के दिन अपना भारी वोझ लादे हुए होगा ।

خَٰلِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ حِمْلًا ﴿101﴾

१०१. जिस में हमेशा ही रहेगा, और उन के लिए क़यामत के दिन (वड़ा) बुरा भार है ।

يَوْمَ يُنفَخُ فِى ٱلصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ ٱلْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿102﴾

१०२. जिस दिन सुर (नरसिंघा) फूंका जायेगा और मुजरिमों को हम उस दिन (डर की वजह) नीली-पीली आंखों के साथ घेर लायेंगे ।

يَتَخَٰفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿103﴾

१०३. वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे होंगे कि हम तो (संसार में) केवल दस दिन ही रहे ।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿104﴾

१०४. जो कुछ वे कह रहे हैं उसकी हक़ीक़त की खबर हमें है, उन में सब से बेहतर रास्ते वाला कह रहा होगा कि तुम केवल एक ही दिन रहे ।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّى نَسْفًا ﴿105﴾

१०५. वे आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं तो (आप) कह दें कि उन्हें मेरा रब कण-कण कर के उड़ा देगा ।

[1] इस से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजा के चिन्ह ख़त्म करना बल्कि उन के अस्तित्व (वजूद) के चिन्ह मिटा डालना, चाहे उनका सम्बन्ध कितने ही पाक इंसान से हो अपमान नहीं, जैसाकि अहले विदअत, क़ब्र पूजक और ताजिया पूजक बताते हैं, वल्कि यह तो तौहीद का उद्देश्य (मक़सद) और धार्मिक सम्मान (ग़ैरत) की बात है । जैसे इस घटना में उस أثر الرسول को नहीं देखा गया जिस से जाहिरी तौर पर रूहानी बरकात का मुशाहदा भी किया गया, उस के बावजूद भी उसकी चिन्ता नहीं की गयी इसलिए कि वह मूर्तिपूजन का जरिया बन गया था ।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿106﴾

१०६. और (धरती) को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा।

لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿107﴾

१०७. जिस में न तो कहीं मोड़ देखेगा, न उंच-नीच।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿108﴾

१०८. जिस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे जिस में कोई कमी न होगी, और अल्लाह रहमान के सामने सभी आवाजें धीमी हो जायेंगी, सिवाय खुसर-फुसर के तुझे कुछ भी न सुनाई देगा।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿109﴾

१०९. उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आयेगी, लेकिन जिसे रहमान (दयालु) हुक्म दे और उसकी बात को पसन्द करे।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿110﴾

११०. जो कुछ उन के आगे और पीछे है, उसे (अल्लाह ही) जानता है, मख़लूक़ का इल्म (ज्ञान) उसे घेर नहीं सकता।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿111﴾

१११. और सभी मुंह उस ज़िन्दा (हमेशा ज़िन्दा) और क़ायम-दायम अल्लाह के सामने आजिज़ी से (विनम्रतापूर्वक) झुके होंगे, बेशक वह नाकाम हो गया जिस ने ज़ुल्म लाद लिया।

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿112﴾

११२. और जो नेकी का काम करे, और ईमानदार भी हो तो न उसे ज़ुल्म का डर होगा न हक़तल्फ़ी का।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿113﴾

११३. और इसी तरह हम ने तुझ पर अरबी (भाषा में) क़ुरआन उतारा है, और कई तरह से उस में डर का बयान किया है ताकि लोग परहेज़गार बन जायें या उन के दिलों में सोच-विचार पैदा करे।

[1] ज़ुल्म यह है कि उस पर दूसरे के पापों का बोझ भी डाल दिया जाये, और हक़तल्फ़ी यह है कि नेकी का बदला कम दिया जाये, यह दोनों बातें वहाँ नहीं होंगी।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿114﴾

११४. इस तरह अल्लाह (तआला) सब से बड़ा सच्चा और हक़ीक़ी मालिक है, तू क़ुरआन पढ़ने में जल्दी न कर इस से पहले कि तेरी तरफ़ जो वह्यी (प्रकाशना) की जाती है वह पूरी की जाये,[1] और यह कह कि रब ! मेरा इल्म बढ़ा ।[2]

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿115﴾

११५. और हम ने आदम को पहले ही ताकीदी हुक्म दे दिया था, लेकिन वह भूल गया और हम ने उस में कोई निश्चय (अज़्म) नहीं पाया ।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿116﴾

११६. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सब ने किया, उस ने साफ़ इंकार कर दिया ।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿117﴾

११७. तो हम ने कहा कि हे आदम ! यह तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है, (ध्यान रहे) ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे कि तू मुसीबत में पड़ जाये ।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿118﴾

११८. यहाँ तो तुझे यह सहूलत है कि न तू भूखा होता है न नंगा ।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿119﴾

११९. और न तू यहाँ प्यासा होता है न धूप से कष्ट उठाता है ।

---

[1] जिब्रील जब वह्यी लेकर आते और सुनाते तो नबी ﷺ भी जल्दी-जल्दी साथ ही साथ पढ़ते जाते कि कहीं कुछ हिस्सा भूल न जायें, अल्लाह तआला ने उस से मना किया और कहा कि ध्यान से पहले वह्यी को सुनें, उस के बाद याद कराना और दिल में बिठाना हमारा काम है, जैसाकि सूरः क़यामः में आयेगा ।

[2] यानी अल्लाह तआला से इल्म के ज़्यादा होने के लिए दुआ करते रहिये, इस में धर्मगुरूओं (आलिमों) के लिए भी नसीहत है कि धार्मिक फ़ैसले में तहक़ीक़ और ग़ौर से काम करें, जल्दी से बचें और ज्ञान के बढ़ाने के ज़रियों को अपनाने में कमी न करें, इसके सिवाय इल्म से मुराद क़ुरआन और हदीस का इल्म है । क़ुरआन में इसी को इल्म कहा गया है और उन के जानकार को विद्वान (आलिम) । दूसरी चीज़ों का इल्म जो इंसान ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हासिल करता है, वह सभी कला हैं, शिल्प (हुनर) हैं और उद्योग हैं ।

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى (120)

१२०. लेकिन शैतान ने उसे वसवसे में डाला, कहने लगा कि हे आदम! क्या मैं तुझे स्थाई (दायमी) जीवन का पेड़ और वह राजपाट बतलाऊँ जो कभी पुराना न हो।

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ز وَعَصٰىٓ اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى (121)

१२१. इसलिए उन दोनों ने उस पेड़ से कुछ खा लिया फिर उन के गुप्तांग (शर्मगाह) खुल गये और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे, आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और बहक गया।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى (122)

१२२. फिर उस के रब ने उसे नवाज़ा, उसकी तौबा को क़ुबूल किया और उसका मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया।[1]

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ج فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ەۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى (123)

१२३. कहा तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो, अब तुम्हारे पास जब कभी भी मेरी ओर से हिदायत पहुँचे, तो जो मेरी हिदायत का पालन करेगा, न वह बहकेगा न कठिनाई में पड़ेगा।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَإِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَعْمٰى (124)

१२४. और जो मेरी याद से मुँह फेरेगा उसका जीवन तंग रहेगा और हम क़यामत के दिन उसे अंधा करके उठायेंगे।

---

[1] इस से कुछ लोग मतलब निकालते हुए कहते हैं कि हज़रत आदम से मज़कूरा (उक्त) भूल नबूअत से पहले हुई, और नबूअत से आप को उसके बाद मुज़य्यन किया गया, लेकिन हम ने पिछले पृष्ठ पर इस 'भूल' की जो हक़ीक़त बयान की है, वह ग़लती से महफ़ूज़ होने के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि ऐसी भूल और ग़लती जिसका तआल्लुक़ दावत और अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने और शरीअत से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत (शख़्सी) कर्म से हो और उस में भी उसका कमज़ोर इरादा हो, तो यह हक़ीक़त में वह पाप ही नहीं है जिस के सबब इंसान अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहक़ बने। इस पर जो पाप शब्द बोला गया है वह सिर्फ़ उसकी बड़ाई और उँचे पद के सबब कि बड़ों की छोटी-सी ग़लती भी बड़ी समझ ली जाती है, इसलिए आयत का यह मतलब नहीं कि हम ने उसके बाद उसे नबूअत के लिए चुन लिया, बल्कि मतलब यह है कि शर्म और तौबा के बाद हम ने फिर उसे उँचे पद पर फ़ायेज़ कर दिया जो पहले उन्हें हासिल था, उनको धरती पर उतारने का फ़ैसला, हमारी इच्छा, इल्म व हिक्मत पर (मबनी) आधारित था, इस से यह न समझ लिया जाये कि यह हमारा ग़ज़ब है जो आदम पर उतरा।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىٓ أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ﴿125﴾

१२५. (वह) कहेगा रब ! मुझे तूने अंधा बनाकर क्यों उठाया? हालांकि मैं देखता भालता था।

قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ ءَايَٰتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ ٱلْيَوْمَ تُنسَىٰ ﴿126﴾

१२६. जवाब मिलेगा कि इसी तरह होना चाहिए था, तूने मेरी आयी हुई आयतों को भुला दिया, इसी तरह आज तू भी भुला दिया जाता है।

وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنۢ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ۚ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰٓ ﴿127﴾

१२७. और हम ऐसा ही बदला हर इंसान को दिया करते हैं जो हद से तजावुज़ करे और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाये, और बेशक आख़िरत (परलोक) का अज़ाब बहुत कड़ा और स्थाई (दायमी) है।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ ٱلْقُرُونِ يَمْشُونَ فِى مَسَٰكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلنُّهَىٰ ﴿128﴾

१२८. क्या उनका मार्गदर्शन (हिदायत) इस बात ने भी न किया कि हम ने उन से पहले बहुत-सी बस्तियाँ हलाक कर दी हैं, जिन के रहने वालों की जगह पर ये चल फिर रहे हैं। बेशक इस में अक़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿129﴾

१२९. और अगर तेरे रब की बात पहले से मुक़र्रर और समय निर्धारण (मुअय्यन) न होता तो इसी वक़्त कज़ा आ चिमटती।

فَٱصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ ءَانَآئِ ٱلَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ ٱلنَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿130﴾

१३०. तो उनकी बातों पर सब्र कर और अपने रब की पाकी और बड़ाई को बयान करता रह, सूरज निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले और रात के मुख़तलिफ़ हिस्सों में भी और दिन के हिस्सों में भी तस्बीह करता रह।[1]

---

[1] कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के के नज़दीक तस्बीह से मुराद नमाज़ है और वह इस से पाँच नमाज़ें समझते हैं। सूरज के निकलने से पहले फ़ज्र, सूरज के डूबने से पहले अस्र, रात के वक़्त मग़रिब और ईशा और दिन के किनारों से ज़ोहर की नमाज़ मुराद है, क्योंकि ज़ोहर का वक़्त यह दिन के पहले हिस्से का आख़िरी और दिन के आख़िरी हिस्से का पहला हिस्सा है, और कुछ के नज़दीक इन वक़्तों में वैसे ही अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ की जाती है जिस में नमाज़, क़ुरआन का पढ़ना, ज़िक्र, दुआ और ऐच्छिक (नफ़्ली) इबादत सब शामिल हैं। मतलब यह है कि आप (ﷺ) इन मूर्तिपूजकों के झुठलाने से मायूस न हों, अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ करते रहें, अल्लाह तआला जब चाहेगा उनको दबोच लेगा।

बहुत मुमकिन है कि तू ख़ुश हो जाये।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿131﴾

१३१. और अपनी निगाह कभी उन चीज़ों की तरफ़ न दौड़ाना, जो हम ने उन में से कई लोगों को दुनियावी शोभा (ज़ीनत) के लिये दे रखी हैं ताकि इस में उनकी आज़माईश कर लें, तेरे रब का दिया हुआ ही (बहुत अच्छा और बाक़ी रहने वाला है।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿132﴾

१३२. और अपने परिवार के लोगों पर नमाज़ के लिए हुक्म दे और ख़ुद भी उस पर मज़बूत रह,[1] हम तुझ से रोज़ी नहीं माँगते बल्कि हम ख़ुद तुझे रोज़ी देते हैं, आख़िर में अच्छा नतीजा परहेज़गारों का ही होता है।

وَقَالُوا۟ لَوْلَا يَأْتِينَا بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّهِۦٓ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ﴿133﴾

१३३. और (उन्होंने) कहा कि यह (नबी) हमारे लिए अपने रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं लाया? क्या उन के पास पहले की किताबों की वाज़ेह निशानियाँ नहीं पहुँचीं?

وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿134﴾

१३४. और अगर हम इस से पहले ही उन्हें अज़ाब से हलाक कर देते तो ज़रूर यह कह उठते कि हे हमारे रब! तूने हमारे पास अपना रसूल (ईशदूत) क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते, इस से पहले कि हम अपमानित (ज़लील) होते और धिक्कारे जाते।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا۟ ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَٰبُ ٱلصِّرَٰطِ ٱلسَّوِىِّ وَمَنِ ٱهْتَدَىٰ ﴿135﴾

१३५. कह दीजिए कि हर एक नतीजे के इंतेज़ार में है तो तुम भी इंतेज़ार में रहो, अभी-अभी पूरे तौर से जान लोगे कि सीधे रास्ते वाले कौन हैं और कौन मार्ग (रास्ता) प्राप्त किये हुए हैं?

---

[1] इस ख़िताब में पूरी मुस्लिम क़ौम नबी ﷺ के मानने वाले है, यानी हर मुसलमान के लिए फ़र्ज़ है कि वह ख़ुद भी नमाज़ पाबंदी से पढ़े और अपने परिवार वालों को भी नमाज़ पढ़ने पर ज़ोर दे।